26 नवम्बर 2022, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 41, अंक 5, कुल पृष्ठ 36 ISSN 2454 - 5163

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

परम वीतराग पार्श्वप्रभु दिव्य जिन चैत्यालय

पार्श्वपुरी-एकलिया, अहमदाबाद (गुजरात)

वीतराग-विज्ञान (472)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन :(0141)2705581, 2707458

व्हाट्सऐप नं. : 7412078704

E-mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7000
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	**10000**

मानव की मानसिक खुराक

प्रशंसा और पुरस्कार एक ऐसी संजीवनी है, जो अनजाने ही अन्तरात्मा में नवीन चेतना का संचार कर देती है। वस्तुतः यह मानव मात्र की वह मानसिक खुराक है, जिसके बिना मानव में काम करने का उत्साह उत्पन्न ही नहीं होता। जिस तरह मनुष्य का शरीर संतुलित भोजन के अभाव में रोगी हो जाता है, कमजोर हो जाता है; उसी तरह संतुलित प्रोत्साहन प्रशंसा की कमी के कारण मानव की कार्य क्षमता कम हो जाती है।

प्रशंसा व प्रोत्साहन एक ऐसी रामबाण अचूक औषधि है, जो हताश, हतोत्साहित व निरुत्साहित मानवों के मनों में आशा, उमंग व उत्साह भर देती है। प्रशंसा की खुराक देकर आप किसी भी व्यक्ति से मनचाहा कठिन से कठिन और छोटे से छोटा काम करा सकते हैं।

दूसरी दृष्टि से देखा जाय तो प्रशंसा पाने और यश खाने की आदत एक बड़ी भारी मानवीय दुर्बलता भी है, जिसका चतुर चालाक व वाकपटु व्यक्ति दुरुपयोग भी कर लेते हैं। स्वार्थी लोग इस मानवीय कमजोरी को पहिचान कर झूठ-मूठ प्रशंसा करके अपने स्वार्थ सिद्ध करने के प्रयास भी करते हैं। अतः यश की भूख और प्रशंसा की प्यास बुझाते समय प्रशंसक के हृदय की पवित्रता की पहिचान और तदनुसार अपनी योग्यता का आकलन एवं आत्म-निरीक्षण तो कर ही लेना चाहिए।

- संस्कार (पृष्ठ-172)

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 41 (वीर निर्वाण संवत् 2549) 472/अंक : 05

मोह उदय दुःख पावै...

यह मोह उदय दुःख पावै, जगजीव अज्ञानी।
यह मोह उदय दुःख पावै।। टेक ।।

निज चेतना स्वरूप नहीं जानै परपदार्थ अपनावै।
पर परिणमन नहीं निज आश्रित, यह तहँ अति अकुलावे।।
यह मोह उदय दुःख पावै।।1।।

इष्ट जानि रागादिक सेवै, ते विधि बंध बढ़ावै।
निजहित-हेत भाव चित सम्यग्दर्शनादि नहीं ध्यावै।।
यह मोह उदय दुःख पावै।।2।।

इन्द्रिय तृप्ति करन के काजै, विषय अनेक मिलावै।
ते न मिलै तब खेद खिन्न है, समसुख हृदय न लावै।।
यह मोह उदय दुःख पावै।।3।।

सकल कर्मक्षय लच्छन लच्छित, मोक्षदशा नहीं चावै।
'भागचन्द' ऐसे भ्रमसेती, यह काल अनन्त गमावै।।
यह मोह उदय दुःख पावै।।4।।

– कविवर पण्डित भागचन्दजी

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के...

'वैराग्य' महाकाव्य पर विशेष प्रवचन

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के लोकप्रिय महाकाव्य **वैराग्य** पर 02 नवम्बर 2022 से विशेष प्रवचनों का लाभ मिला। डॉ. भारिल्ल ने एक-एक पंक्ति के अर्थ को गहराई के स्पष्ट किया। कुछ-कुछ शब्दों व पंक्तियों में इतना रहस्य भरा हुआ है, जिन पर घण्टों प्रवचन किए जा सकते हैं।

उन्होंने काव्य के कलापक्ष के सम्बन्ध में तो अनेक बातें बतलाईं साथ ही भावपक्ष को भी स्पष्ट किया। राजुल के स्वप्न में नेमिकुमार को बुलाकर तथा राजुल व उनके पिता के माध्यम से जो चर्चाऐं प्रस्तुत की हैं वे अत्यधिक तात्त्विक होने के साथ-साथ एक आदर्श जीवन की प्रेरणा भी देती हैं। वास्तव में तो डॉ. भारिल्ल ने इन संवादों के माध्यम से अपना विशेष चिन्तन प्रस्तुत किया है; जो अन्यत्र दुर्लभ है।

काव्य में राजुल की संलाप-विलाप-प्रलाप इसप्रकार तीनों स्थिति के साथ-साथ तत्त्वज्ञान की समझ को भी दर्शाया है। राजुल की दीक्षा की घटना के आधार से उन्होंने दीक्षा के पूर्व भावभूमि कैसी होनी चाहिए? वास्तविक तैयारी कहाँ होनी चाहिए? इत्यादि बातों को स्पष्ट किया। डॉ. भारिल्ल के इन प्रवचनों का PTST के यूट्यूब चैनल पर एक बार अवश्य लाभ लेवें।

समाधि मरण नहीं; जीवन है।

09 से 13 नवम्बर 2022 तक 'समाधि का सार' विषय पर विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन ऑनलाइन माध्यम से किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने मंगल उद्बोधन देते हुए का कि समाधि मरण नहीं है; क्योंकि मरण तो एक समय का होता है। हमें तो अपने जीवन को समाधिमय बनाना है। फिर हमारा मरण स्वयं ही समाधिमरण कहलायेगा। समाधि के लिए किसी के पास जाने की जरूरत नहीं है, जिसे समाधि लेना हो वह अपने जीवन को सरल व सहज बनायें।

सम्पादकीय

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

एकत्व-विभक्त आत्मा

(गतांक से आगे...)

(रोला)

अरे भव्यजन! भव्यभावना भेदज्ञान की।
सच्चे मन से बिन विराम के तब तक भाना।।
जब तक पर से हो विरक्त यह ज्ञान ज्ञान में।
ही थिर न हो जाय अधिक क्या कहें जिनेश्वर।।34।।

अब तक जो भी हुए सिद्ध या आगे होंगे।
महिमा जानो एक मात्र सब भेदज्ञान की।।
और जीव जो भटक रहे हैं भवसागर में।
भेदज्ञान के ही अभाव से भटक रहे हैं।।35।।

भेदज्ञान से शुद्धतत्त्व की उपलब्धि हो।
शुद्धतत्त्व की उपलब्धि से रागनाश हो।।
रागनाश से कर्मनाश अर कर्मनाश से।
ज्ञान ज्ञान में थिर होकर शाश्वत हो जावे।।36।।

मुक्तिमार्ग यह बतलाया अरहन्त देव ने।
यह उपलब्ध सदा हमको है जिनवाणी में।।
गहराई से पढ़ें मनन चिन्तन कर समझें।
समझ न आवे तो ज्ञानी गुरुओं से समझें।।37।।

मुक्तिमार्ग के नेता ज्ञाता विश्व तत्त्व के।
वस्तु का स्वरूप समझाते दिव्यध्वनि से।।
हित उपदेशक अनेकान्त के स्याद्वाद के।
परम वीतरागी होते अरहन्तदेव हैं।।38।।

अनेकान्तमय सप्त तत्त्व की प्रतिपादक अर।
वीतरागता की पोषक जो जिनवर वाणी।।
परम अहिंसक सदाचार की भी पोषक जो।
अरिहन्तों की दिव्यध्वनि वह जिनवाणी है।।39।।

हर अन्तमुर्हुर्त्त में जो अन्तर्मुख होते।
महा तपस्वी परम अहिंसक महाव्रती जो।।
नय-प्रमाण के विशेषज्ञ हैं शान्तचित्त हैं।
ऐसे अद्भुत नग्न दिगम्बर जैन गुरु हैं।।40।।

ऐसे देव-शास्त्र-गुरु एवं नव तत्त्वों के।
श्रद्धानी श्रावक होते हैं सम्यग्दृष्टि।।
यह व्यवहार कथन है लेकिन निश्चय से तो।
आतम के अनुभवी जीव हैं सम्यग्दृष्टि।।41।।

देहादिक परद्रव्यों में अपनापन जिनके।
रागादि विकारी भावों में भी अपनापन है।।
पर्यायों में रमे रहें अपनापन करके।
मिथ्यादृष्टि जीव डूबते भवसागर में।।42।।

करणलब्धि में एक साथ पैदा होते हैं।
निश्चय दर्शन-ज्ञान-चरित तीनो ही निश्चित।।
पूरण होते हैं क्रमशः यह बात अलग है।
पर पैदा होते हैं वे तो एक साथ ही।।43।।

करणलब्धि भी ध्यान रूप है सब जग जाने।
कर्मनाश आरम्भ यहीं से होता भाई।।
मिथ्यात्वकर्मके साथअनन्त-अनुबन्धीका भी।
तो अभाव भी इसी अवस्था में होता है।।44।।

आत्मज्ञान अर आत्मध्यान ही परम धरम हैं।
इनसे ही भव का अभाव होता है भाई।।
भव्यजीव इनके बल पर भवसागर तरते।
अधिक कहें क्या भवसागर से पार उतरते।।45।।

अतः आत्मा को जानो उसमें जम जावो।
सहज जानना होने दो उसमें रम जावो।।
अरे जानने का तनाव मत करो बन्धुवर!।
सहज जानना सहज भाव से ही होने दो।।46।।

सहज जानने का विकल्प भी नहीं करो तुम।
पार पड़ेगी नहीं विकल्पों से हे भाई!।।
क्योंकि विकल्पातीत कहा भगवान आत्मा।
विकल्पजाल में वह कैसे आ सकता भाई?।।47।।

सहज ज्ञान को सहजभाव से ही होने दो।
सहज ध्यान को सहजभाव से ही होने दो।।
ज्ञान-ध्यान में सहज सहजता ही होती है।
रंचमात्र असहज होने का काम नहीं है।।48।।

असहज होना चिन्तित होने जैसा ही है।
एवं चिन्ता के निरोध को ध्यान कहा है।।
चिन्तन भी तो चिन्ता का ही एक रूप है।
अतः ध्यान में चिन्तन का भी तो निरोध है।।49।।

सहज जानना और जानते रहना केवल।
सहज भाव में ज्ञान ज्ञान बस ज्ञान-ज्ञान है।।
अरे जानना ज्ञान जानते रहना भाई!।
ज्ञानभाव की पुनरावृत्ति सहज ध्यान है।।50।।

प्रतीसमय का ज्ञेय ज्ञान का निश्चित ही है।
और ज्ञान का उसमें ही स्थिर हो जाना।।
शान्त भाव से अरे एकदम शान्त भाव से।
उसमें ही जम जाना एकदम थिर हो जाना।।51।।

यह थिरता ही ध्यान कही जाती है भाई!।
इसकी ही महिमा अपार है पार नहीं है।।
यह है वचनातीत विकल्पातीत कही है।
यह शब्दों में कही नहीं जा सकती भाई!।।52।।

यह प्रयत्न से साध्य नहीं है सहज साध्य यह।
सहज साध्य ही इसे कहा है जिनशासन में।।
आगे भी तो सहज भाव में ही रहना है।
यहाँ यत्न की आकुलता में क्यों रहते हो?।।53।।

आकुलता का मार्ग नहीं है जिनशासन यह।
इसमें आकर भी क्यों तुम व्याकुल होते हो?।।
व्याकुलता से बचने को इसमें आये हो।
फिर भी क्यों इतने भारी व्याकुल होते हो?।।54।।

मुक्ति में तो अनन्तकाल तक सहज रहोगे।
मुक्तिमार्ग में भी तुम क्यों व्याकु ल होते हो?।।
आकुलता-व्याकुलता तो केवल दुखमय है।
वह मुक्तिमारग में कैसे हो सकती है?।।55।।

मुक्ति अर मुक्तिमग दोनों ही सुखमय हैं।
अर भगवान आतमा भी आनन्दस्वभावी।।
अरे ज्ञान का पिण्ड और सुखकन्द आतमा।
अनन्त गुणों का गोडाउन भगवान आतमा।।56।।

अरे त्रिकाली ध्रुव है यह भगवान आतमा।
असंख्यात परदेशी अनादि-अनन्त आतमा।।
इसके ही आश्रय से मुक्तिमार्ग पनपता।
इसका दर्शन-ज्ञान-चरित मुक्तिमारग है।।57।।

दर्शन-ज्ञान-चरण की पूरणता मुक्ति है।
शान्त निराकुलभाव निरन्तर ही रहता है।।
सहजभाव ही मुक्ति का सच्चा स्वरूप है।
असहजता तो सदा अरे संसाररूप है।।58।।
अरे अशुद्धि तो आस्रव है बन्धरूप है।
शुद्धि की उत्पत्ति को संवर कहते हैं।।
अर शुद्धि की वृद्धि तो निर्जरा तत्त्व है।
अर शुद्धि की पूरणता को मोक्ष कहा है।।59।।

आनन्द का रसकन्द ज्ञान का पिण्ड मोक्ष है।
अनन्त वीर्य का धनी चण्ड परचण्ड मोक्ष है।।
अरे अनन्तानन्त गुणों का पिण्ड मोक्ष यह।
सादी फिर भी रहे अनन्तानन्त काल तक।।60।।

यह सब होगा सहज एकदम सहज समझ लो।
मुक्ति का तो मार्ग एकदम सहज सरल है।।
जब तक तुम न हुये सहज तब तक ही समझो।
तब तक गोते खाते रहना भवसागर में।।61।।

भवसागर में गोते खाना इष्ट नहीं हो।
तो तुम सभी परिणमन को ही सहज समझलो।।
अरे आज तक कुछ भी असहज नहीं हुआ है।
जो कुछ होता सभी सहज ही तो होता है।।62।।

चौबीसों तीर्थंकर का यह कथन समझलो।
सौ इन्द्रों की उपस्थिति में कहा गया है।।
जिनवाणी में जगह-जगह पर यह फरमाया।
आँख खोलकर देखो तो सब जगह मिलेगा।।63।।

काललब्धि के आने पर ही हाथ लगेगा।
और पाँच समवायों के बिन काम न होगा।।
एक बार तुम निर्विकल्प होकर के भाई!
सहजभाव से स्वयं समझ करके तो देखो।।64।।

मुक्तिमार्ग में आये तो भी बोझा लेकर।
क्रियाकाण्ड का बोझा माथे पर धारण कर।।
सारे जग की सभी समस्यायें ढो-ढोकर।
मरे जा रहे अरे निरन्तर चिन्तित होकर।।65।।

इस जग की तुम केवल चिन्ता ही करते हो।
कु छ भी करना अरे किसी का शक्य नहीं है।।
जग की चिन्ता छोड़ बन्धु अपने में आओ।
अपने में ही जमो-रमो अपने को ध्याओ।।66।।

सदाचार से रहो शुद्ध-सात्विक भोजन लो।
और अहिंसक वृत्ति ही अनुपम वृत्ति है।।
न्याय-नीति से वर्तन करना अनुपमेय है।
पर यह सबकुछ सहजभाव से ही करना है।।67।।

(क्रमशः)

छहढाला प्रवचन

सिद्धि प्राप्ति का उपाय

परमाण-नय-निक्षेप को न उद्योत अनुभव में दिखै,
दृग-ज्ञान- सुख-बलमय सदा नहिं आन भाव जु मो विषै।
मैं साध्य-साधक मैं अबाधक, कर्म अरु तसु फलनितैं,
चित् पिण्ड चण्ड अखंड सुगुणकरंड च्युत पुनि कलनितैं।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजी कृत छहढाला की छठवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

शुद्धोपयोग द्वारा आत्मस्वरूप में लीन रहने वाले मुनिराज के अन्तर में जो चलता है यहाँ उसका वर्णन चल रहा है। मुनिराज के ध्यान में प्रमाण-नय-निक्षेप सम्बन्धी भेद प्रकट नहीं होते। मैं ज्ञान दर्शन-सुख-वीर्यमय हूँ, मुझमें कोई परभाव नहीं है। मैं ही साध्य और मैं ही साधक हूँ। कर्म और कर्मफल से अबाधित हूँ अर्थात् मैं राग-द्वेषरूप कर्मचतना और हर्ष-शोकरूप कर्मफल चेतना से भिन्न ज्ञानचेतनारूप हूँ। मैं अबाधक हूँ, मैं शरीर और मोह से रहित अनन्त गुणों का भण्डार, चमकता हुआ चैतन्य पिण्ड हूँ - मुनियों को ऐसी आत्मानुभूति होती है।

यद्यपि अनुभूति में ऐसे विचाररूप विकल्प नहीं होते; तथापि अनुभूति में ऐसे भावों का वेदन होता है। निर्विकल्प अनुभूति शून्यरूप नहीं है, उसमें अनन्त चैतन्यमय गुणों के रस का स्वाद भरा है। वह तो विकल्पों से शून्य है। अनन्त स्वभावरस से भरी, महा-आनन्दमय - ऐसी अनुभूति द्वारा मुनिराज मोक्ष को साधते हैं।

जैसे पर्वत पर बिजली गिरते ही उसके दो टुकड़े हो जाते हैं, फिर वे जुड़ते नहीं हैं; उसीप्रकार अज्ञान के ऊपर भेदज्ञान की बिजली गिरते ही, राग और चैतन्य की एकताबुद्धि टूटते ही, वे भिन्न-भिन्न भासित होने लगते हैं। धर्मी को राग से भिन्न चैतन्य का अनुभव हुआ। अब पुन: कभी राग और चैतन्य में एकत्वबुद्धि नहीं होगी। राग से भिन्न होकर चैतन्यस्वरूप में ही लीनता करते-करते वे अल्पकाल में मोक्ष प्राप्त करेंगे। जो जीव राग में धर्म मानता है, उसमें एकत्वबुद्धि करके उसी में रमण करता है। उसकी प्रवृत्ति तो अनन्तानुबन्धी कषायों में है, उसे चैतन्य में प्रवृत्तिरूप धर्म नहीं होता। धर्मी को तो राग से निवृत्ति और चैतन्य में प्रवृत्तिरूप स्वरूपाचरण होता है।

भाई! सत्समागम से धर्म का स्वरूप समझकर आत्मा का अनुभव करने पर सम्यक्त्वादिरूप मोक्षमार्ग प्रकट होता है और उसी से आत्मा शोभित होता है। समयसार गाथा 3 में आचार्य कुन्दकुन्ददेव कहते हैं कि एकत्व को प्राप्त शुद्धात्मा ही सर्वत्र सुन्दर है। पर से भिन्न, राग से भिन्न अपने चैतन्यस्वभाव में एकत्व करके धर्मी जीव मोक्षमार्ग के मण्डप में अपनी आत्मा का शृंगार करते हैं। आत्मा वीतरागी सुन्दरता से शोभित हो उठता है।

भाई! तेरा आत्मा दुनिया से भिन्न है। दुनिया के काम का बोझा तेरे ऊपर नहीं है, बाहर के बोझे से तेरी शोभा नहीं है। जिसप्रकार तीर्थंकर भगवान की शोभा समवशरणादि बाह्य वस्तुओं से नहीं है, उनकी शोभा अनन्तज्ञान आदि चतुष्टय से है; उसीप्रकार तेरी शोभा बाह्य पुण्य के वैभव से या राग से नहीं है; तेरी शोभा तो सम्यक्त्वादि वीतरागी शुद्धभावों से है। मुनियों का जीवन रत्नत्रय से अद्भुत सौन्दर्यमय होता है।

यह जीव उपयोगस्वरूप है; परन्तु इसने अनादि से उपयोग को रागादि में मिलाकर अशुद्धाचरण किया है। उपयोग को शुद्धात्मा में जोड़कर शुद्धाचरण कभी नहीं किया। उपयोग और राग का भेदज्ञान होने

पर ही स्वरूप में प्रवृत्तिरूप शुद्धाचरण प्रारम्भ होता है और फिर मुनिदशा होने पर उपयोग अतिशयरूप से स्वरूप में ही आचरण करता है। यहाँ स्वरूपाचरण की महिमा का अद्भुत वर्णन किया जा रहा है।

समयसार की आत्मख्याति टीका के 9वें कलश में आचार्यदेव ने सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के समय आत्मानुभूति का वर्णन करते हुए कहा है कि अनुभूति के समय प्रमाण-नय-निक्षेप के भेद अस्त हो जाते हैं और द्वैत ही प्रतिभासित नहीं होता। यहाँ भी वही बात कही है कि अनुभव में प्रमाण-नय-निक्षेप का उद्योत नहीं दिखता। इसप्रकार पण्डितप्रवर दौलतरामजी ने इस ग्रन्थ की रचना पूर्वाचार्यों के अनुसार ही की है।

इस छन्द में कहा है 'दृग-ज्ञान-सुख बलमय सदा' अर्थात् मुनिराज ध्यान में अपने को दर्शन, ज्ञान, सुख और वीर्यरूप अनुभव करते हैं। आचार्य कुन्दकुन्ददेव नियमसार गाथा 66-67 में यही बात कहते हैं -

कैवल्य दर्शन-ज्ञान-सुख कैवल्य शक्ति स्वभाव जो।
मैं हूँ वहीं यह चिन्तवन होता निरन्तर ज्ञानि को।।66।।
निजभाव को छोड़े नहीं किञ्चित् ग्रहे परभाव नहिं।
देखे व जाने मैं वही, ज्ञानी करे चिन्तन यही।।67।।

धर्मी के ध्यान और चिन्तन का विषय अनन्त चतुष्टयरूप आत्मा ही है। वह कभी अपने चतुष्टयरूप निजभावों को नहीं छोड़ता और रागादि परभावों को कभी ग्रहण नहीं करता। धर्मात्मा अपने को सबको जानने वाले परिपूर्ण ज्ञानस्वभावी परमतत्त्वरूप चिन्तन करते हैं, ध्यान करते हैं, अनुभव करते हैं। भगवान ने भव्यजीवों को इसी परमतत्त्व की भावना अर्थात् ध्यान करने की शिक्षा दी है। तत्त्वज्ञानी जीव ऐसे आत्मा को ही ध्याते हैं, जिसने पहले इस तत्त्व को जाना है, वही उसका ध्यान करेगा न? जाने बिना ध्यान किसका होगा?

भगवान आत्मा अनन्त गुणों का करण्ड अर्थात् भण्डार है। वह अपने चैतन्य स्वभाव से भरा हुआ है और रागादि विभावों से शून्य अर्थात् खाली है, विकार के बोझे से रहित हल्का है। शुद्धोपयोग द्वारा आत्मा की श्रद्धा-ज्ञान होते ही आत्मा कर्मों के भार से हल्का हो जाता है, मिथ्यात्वादि विभावों का बोझा उतर जाता है। आत्मा के अनुभव में तो प्रमाण और नय के विकल्पों का बोझा भी नहीं रहता; क्योंकि वे विकल्प अनुभव में साधक नहीं हैं।

चैतन्य के अनुभव में बाह्य दया, दान आदि के स्थूल विकल्प तो सहायक हैं ही नहीं, गुण-गुणी सम्बन्धी विचारों में जो सूक्ष्मराग होता है, वह भी सहायक नहीं है। मैं ज्ञायक हूँ, शुद्ध नय से शुद्ध हूँ, पर्याय को अन्तर में झुकाकर आत्मा का ज्ञान होता है।

कुछ लोग कहते हैं कि प्रमाणज्ञान करके भी यह जीव संसार में रखड़ता रहा; परन्तु ऐसा कहना ठीक नहीं है, इसने प्रमाणज्ञान कभी किया ही नहीं, यह किसी न किसी भूल में अटक गया है। यदि प्रमाणज्ञान करे तो साथ में सम्यग्ज्ञान अवश्य होता है और भव का अन्त आ जाता है। जिसप्रकार सम्यग्दर्शन निर्विकल्प स्वानुभूति में प्रकट होता है; उसीप्रकार प्रमाण (सम्यग्ज्ञान) भी निर्विकल्प स्वानुभूति में प्रकट होता है। सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान एक साथ प्रकट होते हैं, शुद्धनय भी इसीसमय प्रकट होता है। ऐसे शुद्धनय से स्वरूप में एकाकार होने पर समस्त विकारों से भिन्न चैतन्यतत्त्व का अनुभव होता है, उसमें मोक्षसुख का स्वाद आता है। ऐसा अनुभव हुए बिना साधकदशा या मोक्षमार्ग प्रारम्भ नहीं होता। मोक्ष की साधना करनेवाले जीव ऐसी अनुभूति प्रकट करते हैं; क्योंकि मोक्ष की साधना की अन्य कोई विधि नहीं है।

(क्रमशः)

नियमसार प्रवचन –

मुनिराजों का धन

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा 103 पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं –

जं किंचि मे दुच्चरित्तं सव्वं तिविहेण वोसरे।
सामाइयं तु तिविहं करेमि सव्वं णिरायारं।।103।।

(हरिगीत)

मैं त्रिविध मन-वच-काय से सब दुश्चरित को छोड़ता।
अर त्रिविध चारित्र से अब मैं स्वयं को जोड़ता।।103।।

अन्वयार्थ : मेरा जो कुछ भी दुश्चरित्र है; उस सभी को मैं मन-वचन-काय से छोड़ता हूँ और त्रिविध सामायिक अर्थात् चारित्र को निराकार करता हूँ, निर्विकल्प करता हूँ।

(गतांक से आगे....)

टीका : आत्मगत दोषों से मुक्त होने के उपाय का यह कथन है।

मुझ परम-तपोधन को, भेदविज्ञानी होने पर भी, पूर्वसंचित कर्मों के उदय के कारण चारित्रमोह का उदय होने पर यदि कुछ भी दु:चारित्र हो, तो उस सर्व को मन-वचन-काया की संशुद्धि से मैं सम्यक् प्रकार से छोड़ता हूँ। 'सामायिक' शब्द से चारित्र कहा है – कि जो (चारित्र) सामायिक, छेदोपस्थापन और परिहारविशुद्धि नाम के तीन भेदों के कारण तीन प्रकार का है। (मैं उस चारित्र को निराकार करता हूँ) अथवा मैं जघन्य रत्नत्रय को उत्कृष्ट करता हूँ; नव पदार्थरूप परद्रव्य के श्रद्धान-ज्ञान-आचरण-स्वरूप रत्नत्रय साकार (सविकल्प) है, उसे निजस्वरूप के श्रद्धान-ज्ञान-

अनुष्ठानरूप स्वभावरत्नत्रय के स्वीकार (अंगीकार) द्वारा निराकार-शुद्ध करता हूँ - ऐसा अर्थ है। और (दूसरे प्रकार से कहा जाये तो), मैं भेदोपचार चारित्र को अभेदोपचार करता हूँ तथा अभेदोपचार चारित्र को अभेदानुपचार करता हूँ - इसप्रकार त्रिविध सामायिक को (चारित्र को) उत्तरोत्तर स्वीकृत (अंगीकृत) करने से सहज परम तत्त्व में अविचल स्थितिरूप सहज निश्चयचारित्र होता है - जो (निश्चय-चारित्र) निराकार तत्त्व में लीन होने से निराकार चारित्र है।

गाथा 103 पर प्रवचन

मैं चैतन्यचिन्तामणि परमात्मा हूँ, रागादिभाव मैं नहीं हूँ - ऐसा प्रथम जिसने निर्णय किया हो, उसको ही रागादि का प्रत्याख्यान होता है। चैतन्य में लीन होने पर वीतरागता प्रगट होती है और रागादि दोषों का प्रत्याख्यान होता है। आत्मगत दोषों से मुक्त होने के उपाय का यह कथन है।

मुझ परमतपोधन को भेदविज्ञानी होने पर भी पूर्वसंचित कर्म के उदय के कारण चारित्रमोह का उदय होने पर जो कुछ भी दुःचारित्र हो, उस सबको मैं मन-वचन-काय की संशुद्धि से सम्यक् प्रकार से तजता हूँ।

चैतन्य में लीनता होने पर जो वीतरागभाव प्रगट होता है, वही मुनियों का परमधन है। चैतन्य के सहज अतीन्द्रिय आनन्द में लीन होने पर इच्छा की उत्पत्ति नहीं होती - ऐसी वीतरागी दशा मुनियों का परमतप है। मैं सहजशुद्ध कारणपरमात्मा हूँ और रागादि कोई बाह्यभाव मेरे नहीं हैं - ऐसा भेदविज्ञान मुनि को हुआ है। शुभाशुभभावों से भिन्नता का भान होने पर भी जो कुछ भी शुभाशुभपरिणाम हुये हों तो उन सबका प्रत्याख्यान करता हूँ - इसप्रकार भेदज्ञान के बाद ही प्रत्याख्यान होता है। पूर्वसंचित कर्म के निमित्त से चारित्र मोहनीय के उदयवश कोई दुःचारित्र हुआ हो तो मन-वचन-काय की

संशुद्धि से (अर्थात् उसका लक्ष्य छोड़कर) मैं उस दुःचारित्र को छोड़ता हूँ।

'सामायिक' शब्द से चारित्र कहा है। जो (चारित्र) सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि नामक तीन भेदों के कारण तीनप्रकार का है। मैं उस चारित्र को निराकार करता हूँ।

शुभविकल्प उठे, उसका नाम **साकारचारित्र** है और विकल्प छोड़कर स्वरूप में लीन होना **निराकारचारित्र** है।

यहाँ कहते हैं कि मैं जघन्यरत्नत्रय को उत्कृष्ट करता हूँ अर्थात् स्वभाव की श्रद्धा-ज्ञान-रमणतारूप जो दशा प्रगटी है, उसको उत्कृष्ट करता हूँ। हीनदशा को छोड़कर स्वभाव के आश्रय से वीतरागी दशा प्रगट करता हूँ।

नवपदार्थरूप परद्रव्य का श्रद्धान-ज्ञान-आचरणस्वरूप रत्नत्रय साकार (सविकल्प) है, उसको निजस्वरूप के श्रद्धान-ज्ञान-अनुष्ठानरूप स्वभावरत्नत्रय के अंगीकार द्वारा शुद्ध निराकार करता हूँ - ऐसा अर्थ है।

यहाँ नवपदार्थों को परद्रव्य कहा अर्थात् 'मैं जीव हूँ' - ऐसा विकल्प करना राग है, परद्रव्य है; नवतत्त्वों के विकल्प परद्रव्य हैं। अखण्डानन्द घन आत्मा का श्रद्धान-ज्ञान और रमणता के अतिरिक्त नवतत्त्व के आश्रय से जो व्यवहारश्रद्धा-ज्ञान और रमणता है, वह 'साकार' है। वह रत्नत्रय विकल्पवाला है, इसलिये 'साकार' है। निश्चय-आत्मा का भान वर्तता है, मुनिदशा वर्तती है; परन्तु वहाँ जो नवतत्त्व के श्रद्धान-ज्ञान-आचरणरूप विकल्प उठता है, वह रत्नत्रय 'साकार' है। ध्रुव आत्मा के अलावा एक समय की संवर की निर्मलपर्याय के लक्ष्य से भी विकल्प उठता है; इसलिये वह भी परद्रव्य है। जिस किसी पदार्थ के लक्ष्य से विकल्प की उत्पत्ति हो, उसको परद्रव्य कहा है। स्वद्रव्य तो उसी को कहा कि जिसके आश्रय से निर्विकल्पता उत्पन्न हो।

नवतत्त्व की श्रद्धा का विकल्प पुण्य है। मलिनपर्याय भी त्रिकालीतत्त्व की अपेक्षा से परद्रव्य है और सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की पर्याय भी त्रिकालीतत्त्व की अपेक्षा से परद्रव्य है, इनमें से किसी के भी आश्रय से कल्याण नहीं होता; कल्याण तो त्रिकाली ध्रुवतत्त्व के आश्रय से ही होता है। प्रथम ऐसे तत्त्व का निर्णय करके उसमें एकाग्र होने पर मुनिदशा प्रगट होती है।

रागादि का प्रत्याख्यान करना है न? तो जिस तत्त्व के आश्रय से उसका प्रत्याख्यान होगा – उसकी यह बात है। त्रिकाली तत्त्व के आश्रय से ही प्रत्याख्यान की निर्मलदशा प्रगट होती है। संवर-निर्जारूप जो निर्मल पर्याय प्रगटी उसमें से नई पर्याय नहीं आती; इसलिये उसको भी परद्रव्य कहकर ध्रुवतत्त्व का ही आश्रय कराने के लिए उस ध्रुवतत्त्व को स्वद्रव्य कहा है। शुद्ध चैतन्यचिन्तामणि कारणपरमात्मा ही मैं हूँ – ऐसी दृष्टि ही सम्यग्दर्शन है, पश्चात् उसमें लीनता होना सम्यक्चारित्र है।

त्रिकाली चैतन्यतत्त्व मैं हूँ। शरीर, कर्म आदि अजीव हैं; उनके कारण मुझे राग होता है – ऐसा माननेवाला अजीव और आस्रवतत्त्व को भिन्न-भिन्न नहीं जानता। रोटी नहीं खाने से तप और निर्जरा होती है - ऐसा माननेवाले ने अजीव और निर्जरातत्त्व को भिन्न-भिन्न नहीं जाना। तप और चारित्र को कष्टदायक माने तो उसने संवर-निर्जरा को तथा पुण्य-पाप को भिन्न नहीं जाना, क्योंकि तप और चारित्र तो निर्जरा है, जबकि कष्ट पाप है।

नवतत्त्वों को जैसे हैं, वैसा जानकर उनकी श्रद्धा-ज्ञान कर लेना तो व्यवहारश्रद्धा-ज्ञान है। व्यवहाररत्नत्रय को यहाँ 'साकार' कहा है, उसमें शुभराग है, उसे भी छोड़कर निजस्वरूप के श्रद्धान-ज्ञान-अनुष्ठानरूप स्वभावरत्नत्रय को अंगीकार करके मैं रत्नत्रय को निराकार, शुद्ध करता हूँ – ऐसा कहा है।

शुद्धभाव अधिकार में भी कहा था कि जीवादि सात तत्त्वों का समूह परद्रव्य है, वह वास्तव में उपादेय नहीं है। शुद्धकारणपरमात्मा ही अन्त:तत्त्वरूप स्वद्रव्य है, वही मुझे उपादेय है। पहले स्वद्रव्य-परद्रव्य की बात भी आई थी, वहाँ कहा था कि सर्व विभावगुण-पर्यायों से रहित शुद्ध अन्त:तत्त्वस्वरूप स्वद्रव्य ही उपादेय है।

यहाँ मुनिराज कहते हैं कि मैं निजपरमात्मतत्त्व के श्रद्धान-ज्ञान और एकाग्रता द्वारा व्यवहारश्रद्धान-ज्ञान और चारित्र के विकल्प को छोड़ता हूँ अर्थात् राग को छोड़कर रत्नत्रय को शुद्ध करता हूँ। साकार रत्नत्रय को निराकार करता हूँ – इसका अर्थ ऐसा समझना कि साकार रत्नत्रय में जो राग है, उसे छोड़कर स्वभाव के आश्रय से वीतराग रत्नत्रय प्रगट करता हूँ। देखो! इसका नाम प्रत्याख्यान है और ऐसा प्रत्याख्यान निजस्वभाव के आश्रय से प्रगट होता है। **(क्रमश:)**

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित...

परमागम प्रवेशिका भाग : 2 व 3 फ्री...फ्री...फ्री

डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया द्वारा लिखित ये नवीनतम कृति मैंने आद्योपांत पढ़ी है। मुझे महसूस हुआ कि जैन दर्शन के सिद्धान्तों की संक्षिप्त जानकारी के लिए यह अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। संक्षिप्त में कहें तो परमागम प्रवेशिका के चारों भाग मिलकर जैन डिक्शनरी का ही काम करते हैं। अत: मैं चाहती हूँ कि यह पुस्तक अधिकांश हाथों में पहुँचे, इसी भावना से यह पुस्तक मेरी ओर से सभी को नि:शुल्क दी जा रही हैं। **– श्रीमती कमलाबाई भारिल्ल**

प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें

नन्दकिशोर पारीक – 7412078704

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

परिणम्यपरिणामकत्व शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

आहाहा...! सम्यग्दृष्टि जीव को अन्तर में ऐसी प्रतीति हुई है कि सर्व परज्ञेय-शरीर, मन, वाणी, कर्म, भावकर्म रागादि सभी मेरे ज्ञान में ज्ञात होने लायक हैं; परन्तु उनमें स्वामित्वबुद्धि नहीं है। अरे! लोग तो कितनी स्थूल बात करते हैं कि व्यवहार, शुभराग मोक्ष का मार्ग है; पर यहाँ उनकी बात नहीं चलती, शुभराग भी परज्ञेय हैं, अनात्मा है। उन ज्ञेयों को ग्रहण करने का अर्थात् उनको जानने का आत्मा का स्वभाव है। बारहवीं गाथा में भी आया है कि व्यवहारनय जाना हुआ प्रयोजनवान है तथा ग्यारहवीं गाथा में भी आया है कि स्वयं का एक त्रिकाली ज्ञायकभाव सत्यार्थ है; क्योंकि उसके आश्रय से सम्यग्दर्शन और धर्म होता है। सभी दृष्टियों से देखें तो यह एक ही सिद्धान्त सिद्ध होता है।

सम्यग्दृष्टि के जो रागांश बाकी है, वह उसके लिए परज्ञेयरूप से ज्ञान में जानने लायक है; परन्तु राग मेरा है अथवा राग से ज्ञान होता है - ऐसा नहीं है। आहाहा...! जो राग से भिन्न पड़कर वीतराग होकर निकला है। उसका राग तो ज्ञान का ज्ञेय मात्र है। राग रागरूप से राग में है। ज्ञान ज्ञानरूप से ज्ञान में है। उनका परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं है। बापू! राग से ज्ञान नहीं होता है और ज्ञान से राग नहीं होता है।

आचार्यश्री अमृतचन्द्रस्वामी कहते हैं कि जिससमय जितना राग होता है, उस-उस समय में व्यवहारनय से वह जानने लायक है। बारहवीं गाथा की टीका में **'तदात्वे'** शब्द पढ़ा है, इसका अर्थ यह है कि उस-उस काल में राग जानने योग्य है अर्थात् राग मेरे ज्ञान का ज्ञेय है - ऐसा कहना व्यवहार है। वास्तव में उस-उस समय ज्ञान की स्व-परप्रकाशक पर्याय स्वयं अपने से प्रगट होती है और उसमें राग परज्ञेयरूप से मात्र ज्ञात होता है। राग ज्ञेय है; इसलिए ज्ञान की परप्रकाशक पर्याय प्रगट होती है - ऐसा नहीं है; बल्कि स्व-पर को जाननेवाली ज्ञान की क्रमवर्ती पर्याय स्वयं की सामर्थ्य से प्रगट होती है। राग के अथवा निमित्त के कारण से प्रगट होती है - ऐसा नहीं है।

अरे भगवान! जिनेन्द्र का मार्ग तो देखो, आहाहा...! तेरी चीज अन्दर में ऐसी है कि जिससमय अन्दर में राग आता है, उससमय उस राग सम्बन्धी ज्ञान होता है; तथापि उस राग से ज्ञान की पर्याय उत्पन्न नहीं होती। ज्ञान की पर्याय स्वयं से उत्पन्न होती है, उसमें ज्ञेय का, राग का ज्ञान हुआ - ऐसा कहना तो व्यवहार है। तथा मैं ज्ञान की पर्याय को जाननेवाला हूँ - यह भी भेदरूप व्यवहार है। मैं तो एक ज्ञायक हूँ - ऐसा अन्दर में परिणमन हो गया, तब ज्ञायक हो गया। स्वयं के ज्ञान में परवस्तु ज्ञेय है और पर के ज्ञान में स्वयं ज्ञात होता है - ऐसी जीव की प्रमाण-प्रमेय शक्ति का जो यथार्थ स्वरूप मानता है, उसको अन्तर में शक्तिवान द्रव्य की प्रतीति होती है और इसी का नाम सम्यग्दर्शन है।

आहाहा...! यहाँ परिणम्य-परिणामकत्व नाम की शक्ति का वर्णन चलता है। जयसेनाचार्य कहते हैं कि एक आधार, एक शक्ति अथवा एकभाव को जो यथार्थ समझता है, वह सभी भावों को यथार्थ समझता है। ऐसा यह वस्तुस्वरूप है। आहाहा...! आत्मा स्व-परज्ञेयों को जानता

है – ऐसा कहना व्यवहार है; क्योंकि जानता है – ऐसा भेद किया; इसलिए व्यवहार है। आत्मा तो बस एक ज्ञायक है। ज्ञान द्वारा जानता है, ऐसा भेद भी जिसमें नहीं है – ऐसा त्रिकाली भूतार्थ एक ज्ञायक प्रभु आत्मा है और वह सम्यग्दर्शन का विषय है। अहो! वीतराग-सर्वज्ञ परमात्मा की वाणी की यह असाधारण अमृतधारा है। देखो! राई के दाने के बराबर आलू के एक टुकड़े में असंख्य औदारिक शरीर हैं और उन एक-एक शरीर में अनन्त निगोदिया जीव हैं। छह महीना और आठ समय में 608 जीव मोक्ष जाते हैं। आजतक जितने सिद्ध हुए हैं, उनसे अनन्तगुने जीव एक निगोद शरीर में हैं। वे सभी जीव भगवान ज्ञायक के ज्ञान के ज्ञेय हैं। अहो! भगवान ज्ञायक का कोई अद्भुत अपरिमित ज्ञान सामर्थ्य है। भाई! लोक में अनन्तजीव हैं, उनकी मात्र दया पालना ही धर्म नहीं है; परन्तु स्वपर को जाननेवाले परम अद्भुत ज्ञानस्वभाव की महिमा लाकर अन्तर्मुख होना ही धर्म है – ऐसा आचार्यदेव का विशेष अभिप्राय है।

'पर की रक्षा का भाव पाप है' – यदि ऐसा कोई मानता है; तो उसकी यह मान्यता खोटी है, मिथ्या है। तथा पर की रक्षा आत्मा कर सकता है – यह मान्यता भी ठीक नहीं है, क्योंकि वस्तुत: एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्ता नहीं है; परन्तु परजीवों की रक्षा का परिणाम तो पुण्यभाव है। ऐसा भाव धर्मी को भी होता है; परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि धर्मी परजीवों की रक्षा कर सकता है; क्योंकि ऐसा वस्तुस्वरूप नहीं है। रक्षा के परिणाम से रक्षा हो जाए – यह बात तीन काल में सम्भव नहीं है।

बहुत गम्भीर बात है भाई! लोग सत्य को समझे बिना विरोध करते हैं; परन्तु उससे क्या लाभ है? भाई! निज अनन्तगुण स्वभावमय द्रव्य के ऊपर दृष्टि जाने पर स्वानुभूति प्रगट होती है, उसी का नाम सम्यग्दर्शन और धर्म है। इसप्रकार यहाँ परिणम्य-परिणामकत्वशक्ति समाप्त हुई। ●

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

(गतांक से आगे....)

प्रश्न : अपनी आत्मा को जानने से ही सम्यग्दर्शन होता है तो फिर अरहन्त के द्रव्य-गुण-पर्याय को जानने की क्या आवश्यकता है?

उत्तर : अरहन्त के द्रव्य-गुण-पर्याय को जानना आवश्यक है। अरहन्त की पूर्ण पर्याय को जानने पर ही, वैसी पर्याय अपने में प्रगट नहीं हुई है, इसलिये उसे स्वद्रव्य की तरफ लक्षित करने पर दृष्टि द्रव्य के ऊपर जाती है और सर्वज्ञ-स्वभाव की प्रतीति होती है; इसलिये अरहन्त के द्रव्य-गुण-पर्याय को जानने पर सम्यग्दर्शन हुआ - ऐसा कहा जाता है।

प्रश्न : शुद्धस्वरूप का इतना विशाल स्तम्भ दिखलाई क्यों नहीं पड़ता?

उत्तर : दृष्टि बाहर ही भ्रमावे, उसको कैसे दिखाई पड़े? पुण्य के भाव में बड़प्पन देखा करता है; परन्तु अंदर जो विशाल महान प्रभु पड़ा है, उसे देखने का प्रयत्न नहीं करता। यदि देखने का प्रयत्न करे तो अवश्य दिखाई पड़े।

प्रश्न : जिनबिम्ब-दर्शन से निधत्ति और निकाचित कर्म का भी नाश होता है और सम्यग्दर्शन प्रकट होता है - ऐसा श्री धवलग्रन्थ में वर्णन आता है। तो क्या परद्रव्य के लक्ष्य से सम्यग्दर्शन उत्पन्न होता है?

उत्तर : श्री धवलग्रन्थ में जो ऐसा पाठ आता है उसका अभिप्राय यह है कि जिनबिम्ब स्वरूप निज अन्तरात्मा सक्रिय चैतन्यबिम्ब है, उसके ऊपर लक्ष्य और दृष्टि जाने से सम्यग्दर्शन प्रकट होता है और निधत्ति व निकाचित कर्म टलते हैं, तब जिनबिम्ब-दर्शन से सम्यग्दर्शन हुआ और

कर्म टला – ऐसा उपचार से कथन किया जाता है। चूँकि पहले जिनबिम्ब के ऊपर लक्ष्य था, इसलिये उसके ऊपर उपचार का आरोप किया जाता है। सम्यग्दर्शन तो स्व के लक्ष्य से ही होता है, पर के लक्ष्य से तो तीनकाल में हो सकता नहीं – ऐसी वस्तुस्थिति है और वही स्वीकार्य है।

प्रश्न : मिथ्यात्व का नाश स्वसन्मुख होने से ही होता है या कोई और दूसरा उपाय भी है?

उत्तर : स्वाश्रय से ही मिथ्यात्व का नाश होता है, यही एकमात्र उपाय है। इसके अतिरिक्त दूसरा उपाय प्रवचनसार गाथा 86 में बताया है कि स्वलक्ष्य से शास्त्राभ्यास करना उपायान्तर है, इससे मोह का क्षय होता है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति का कारण क्या है?

उत्तर : सम्यग्दर्शन की पर्याय प्रगट हुई है वह राग की मंदता के कारण प्रगट हुई है – ऐसा तो है ही नहीं; किन्तु सूक्ष्मता से देखें तो द्रव्य-गुण के कारण सम्यग्दर्शन हुआ है – ऐसा भी नहीं है। सम्यग्दर्शन की पर्याय का लक्ष्य और ध्येय व आलम्बन यद्यपि द्रव्य है; तथापि पर्याय अपने ही षट्कारक से स्वतन्त्र परिणमित हुई है। जिससमय जो पर्याय होने वाली है उसको निमित्तादि का अवलम्बन तो है नहीं, वह द्रव्य के कारण उत्पन्न हुई है – ऐसा भी नहीं है। भाई! अन्तर का रहस्य कच्चे पारे की तरह बहुत गम्भीर है, पचा सके तो मोक्ष होता है।

प्रश्न : पूर्णता के लक्ष्य से प्रारम्भ सो प्रारम्भ – ऐसा श्रीमद् राजचन्द्रजी ने कहा है। वहाँ पूर्णता के लक्ष्य से प्रारम्भ में त्रिकाली द्रव्य को लेना अथवा केवलज्ञान पर्याय को लेना? कृपया स्पष्टीकरण कीजिये।

उत्तर : यहाँ पूर्णता के लक्ष्य में साध्यरूप केवलज्ञान पर्याय लेना। त्रिकाली द्रव्य तो ध्येयरूप है। केवलज्ञान उपेय है और साधकभाव उपाय है। उपाय का साध्य उपेय केवलज्ञान है। **(क्रमशः)**

समाचार दर्शन -

सहजता दिवस कार्यक्रम सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक 21 नवम्बर 2022 को अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के जन्म दिवस के अवसर पर उनके उपकारों का स्मरण करते हुए सहजता दिवस के रूप में एक समारोह का भव्य आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता अंतर्राष्ट्रीय विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने की।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री डॉ. कृष्णगोपालजी कुमावत (मुख्य निर्देशक - अमर जैन हॉस्पिटल जयपुर) एवं विशिष्ट अतिथियों में डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री ताराचन्दजी सोगानी, पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, श्री अनुभवप्रकाशजी भारिल्ल, श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल, डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी टड़ैया आदि मंचासीन थे। सहजता दिवस का परिचय पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने दिया। संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं मंगलाचरण सहज जैन छिंदवाड़ा ने किया।

विशेष वक्तव्य – श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ कृष्णगोपालजी कुमावत, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, श्री मिलापचन्दजी डंडिया, डॉ. अखिलजी बंसल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, श्रीमती कमलाजी भारिल्ल, पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन एवं पण्डित अमनजी शास्त्री लोनी ने अपने उद्बोधन में बड़े दादा का स्मरण कर अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। अंत में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का अध्यक्षीय उद्बोधन प्राप्त हुआ।

छात्र वक्तव्य – अविरल जैन, खनियांधाना तथा चेतन जैन, गुढ़ाचन्द्रजी ने वक्तव्य एवं कपिल जैन बम्होरी ने कविता से अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

पुरस्कार घोषणा – विशेष रूप से पण्डित रतनचन्द भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट जयपुर के तत्त्वावधान में पण्डित रतनचन्द भारिल्ल पुरस्कार 2022 की घोषणा की गई, जिसमें **पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, श्रीमती सुनीताजी जैन जयपुर, श्री राकेशजी जैन गोदिका जयपुर, पण्डित समर्थ जैन हरदा एवं अरविंद जैन खड़ैरी** को इस पुरस्कार से सम्मानित करने हुए किया गया।

सिद्धचक्र महामण्डल विधान सानन्द सम्पन्न

कारंजा (महा.) : यहाँ 31 अक्टूबर से 07 नवम्बर 2022 तक अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री पार्श्वनाथ स्वामी दिगम्बर जैन सेनगण मंदिर में सिद्धचक्र महामण्डल विधान का मंगलमय आयोजन किया गया।

इस अवसर पर युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रात: समयसार एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से प्रवचनों का लाभ मिला। विधान पण्डित अजितजी शास्त्री एवं पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री अलवर ने सम्पन्न कराया। ध्वजारोहण श्री अरुणभाई गहाणकारी मुम्बई व मण्डप उद्घाटन श्री प्रशांतजी संगई नाशिक ने किया। 06 नवम्बर को सेनगण मन्दिर के पदाधिकारियों की ओर से डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का 1908 में कारंजा से सर्वप्रथम मुद्रित आत्मख्याति वचनिका व प्रशस्ति भेंटकर सम्मान किया गया।

इस आयोजन की सफलता में श्री शिरीषजी चवरे, श्री भरतजी भोरे, श्री विनम्रजी चवरे, श्री अलोकजी चवरे, श्री विवेकजी गहाणकरी, श्रीमती विजयाताई भिसीकर, श्रीमती प्रज्ञाताई डोनगावकर, पं. अलोकजी शास्त्री, पं. चिंतामनजी शास्त्री, पं. पंकजजी शास्त्री, पं. संयमजी शास्त्री का सहयोग रहा।

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का तूफानी दौरा

मंगलायतन में दीपावली पर्व के अवसर पर 21 अक्टूबर से 27 अक्टूबर तक, **महावीर जिनालय नागपुर** में 28 अक्टूबर सायं से 30 अक्टूबर सुबह तक, **कारंजा** में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर 30 अक्टूबर सायं से 07 नवम्बर सुबह तक, **एम्प्रेस सिटी नागपुर** में 07 नवम्बर को सायंकाल, **उदयपुर** पंचकल्याणक में 08 नवम्बर से 10 नवम्बर सुबह तक, **नवरंगपुरा (अहमदाबाद)** में 10 नवम्बर सायं व 11 नवम्बर सुबह, **राजकोट** में 11 नवम्बर सायं से 13 नवम्बर सुबह तक, **सिद्धक्षेत्र गिरनारजी** में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर 13 नवम्बर सायं से 19 नवम्बर 2022 तक। उक्त सभी स्थानों पर प्रात: समयसार एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचनों का लाभ मिला। उदयपुर पंचकल्याणक में दोनों ही समय पंचकल्याणक विषय पर विशेष प्रवचन हुए।

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

सिद्धक्षेत्र गिरनारजी (गुज.) : यहाँ दिनाँक 15 से 21 नवम्बर 2022 तक श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के तत्त्वावधान में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सिद्धचक्र महामण्डल विधान, गुरूदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त प्रतिदिन सात प्रवचनों का लाभ मिला। विशिष्ट विद्वानों में पण्डित शैलेषभाई शाह, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित प्रदीपजी झांझरी, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित नीलेशभाई मुम्बई, डॉ. मनीषजी मेरठ के जिनागम के विविध विषयों पर प्रवचन हुए।

शिविर में श्री अशोकजी बड़जात्या, श्री प्रदीपजी चौधरी, श्री अशोकजी भोपाल, श्री आई. एस. जैन, श्री उल्लासभाई जोबालिया आदि का समागम प्राप्त हुआ। विधान पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा व पण्डित अशोकजी उज्जैन के सहयोग से एवं अन्य कार्यक्रम पण्डित रजनीभाई दोषी व पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के सहयोग से हुए। शिविर के आयोजन में श्री कमलेशभाई भरतभाई टिम्बड़िया का विशेष सहयोग रहा। शिविर का निर्देशन श्री बसन्तभाई दोषी एवं श्री महिपालजी 'ज्ञायक' ने किया।

अष्टाहिका सिद्धचक मण्डल विधान सम्पन्न

देवलाली (महा.) : यहाँ पूज्य श्रीकानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में कार्तिक माह के अष्टाह्निका महापर्व पर श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। समारोह के आमंत्रणकर्ता श्रीमती मंजुला-नगिनदास मेहता, प्रीति-भावेशभाई देसाई परिवार मुम्बई रहे।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचन के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी देवलाली के सिद्धचक्र विधान की जयमाला, पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा के समयसार व मोक्षमार्ग प्रकाशक, पण्डित अनिलजी धवल के ज्ञान गोष्ठी एवं पण्डित शीतलभाई लन्दन के गुणस्थान विषय पर व्याख्यानों का लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य श्री सुनीलजी धवल, श्री अनिलजी धवल, श्री दीपकजी धवल भोपाल ने कराए। आभार-प्रदर्शन श्री विपुलभाई मोटाणी ने किया।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ 8 से 10 नवम्बर 2022 तक श्री 1008 शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में तीन दिवसीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के पंचकल्याणक विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। यह आयोजन प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी देवलाली के निर्देशन में डॉ. विवेकजी इन्दौर, पण्डित अश्विनजी नौगामा, डॉ. अंकितजी लूणदा, पण्डित सुनीलजी धवल व पण्डित अनिलजी शास्त्री जयपुर के सहयोग से हुआ।

08 नवम्बर को सर्वप्रथम जिनेन्द्र रथ यात्रा मंदिरजी से प्रतिष्ठा मण्डप तक पहुँची। ध्वजारोहण श्री राजमलजी-अंकुरजी टीमरवा परिवार ने किया। तत्पश्चात् याग मण्डल विधान, श्रीजी स्थापना, नांदी विधान, गर्भ कल्याणक इन्द्र सभा, राजसभा, सोलह स्वप्न प्रदर्शन जैसे मांगलिक आयोजन सम्पन्न हुए। **09 नवम्बर** को प्रात: इन्द्र-इन्द्राणियों द्वारा गर्भ कल्याणक एवं जन्म कल्याणक की पूजन सम्पन्न हुई। दोपहर को इन्द्र सभा एवं राजसभा आयोजित हुई एवं दीक्षा कल्याणक की पूजन हुई। रात्रि में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा रचित लोकप्रिय नाटक **'भरत का अन्तर्द्वन्द्व'** का मंचन किया गया। **10 नवम्बर** को केवलज्ञान कल्याणक एवं निर्वाण कल्याणक की पूजन सम्पन्न हुई। जिनेन्द्र रथयात्रा पूर्वक समवशरण और मूलवेदी पर जिनेन्द्र भगवानकी स्थापना की गई।

महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री शान्तिलाल-पुष्पाजी अखावत एवं तीर्थंकर के माता-पिता श्रीमती रतनदेवी-लालचन्दजी नवाडिया थे। इस प्रतिष्ठा महोत्सव में 11 इंच की स्फटिक मणि की प्रतिमा के अतिरिक्त दो 18 इंच की जिन प्रतिमा, समवशरण में 21 इंच की चारों दिशाओं में प्रतिमा विराजमान की गईं। सम्पूर्ण आयोजन डॉ. महावीरप्रसादजी जैन एवं डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री के निर्देशन में पं. खेमचन्द जैन, पं. गजेन्द्रजी शास्त्री, पं. तपिशजी शास्त्री, पं. नीलेशजी शास्त्री, हेमन्तजी शास्त्री, अनुभवजी शास्त्री, ज्ञायकजी शास्त्री, हितंकरजी शास्त्री, संवेगजी शास्त्री के सहयोग से हुआ।

ढाईद्वीप पंचकल्याक स्थल की भूमिशुद्धि

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के निर्देशन में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट इंदौर द्वारा आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग में निर्मित तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन का पंचकल्याणक महोत्सव 20 से 26 जनवरी 2023 तक सम्पन्न होने जा रहा है।

पंचकल्याणक का भव्य प्रांगण जिस स्थल पर निर्मित किया जाएगा, उस स्थल की भूमिशुद्धि का कार्यक्रम 02 नवम्बर 2022 को सम्पन्न हुआ। भूमिशुद्धि का मंगल अनुष्ठान पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्रीमती सोनलजी जैन, श्री अनुभवजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री एवं पण्डित अशोकजी शास्त्री की उपस्थिति में हुआ।

देशभर में ढाईद्वीप रथ का प्रवर्तन

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर में सदी के ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में अलौकिक सौंदर्य युक्त ढाईद्वीप जिनायतन की रचना सदृश ढाईद्वीप रथ का प्रवर्तन किया जा रहा है।

देशभर में भ्रमण करते हुए ढाईद्वीप रथ ने महाराष्ट्र में गजपंथा, देवलाली, पुणे, कोल्हापुर, हेरले, बेलगाम, सांगली, सोलापुर, नातेपुते, पंढरपुर, सेलू, वाशिम, कारंजा, अकोला, डासाला, वरुण, चिखली, हिंगोली, औरंगाबाद, मलकापुर, नागपुर, रिसोड, काटोल, राजस्थान में पिडावा, झालावाड़, झालरापाटन, मंड़ला, कोटा, बिजोलिया, सिंगोली, बेंगू, नीमच, भीलवाड़ा, विजयनगर, पीसांगन, अजमेर, भिण्डर, लूणदा, बाँसवाड़ा, उदयपुर, गुजरात में तलोद, चैतन्यधाम, नवरंगपुरा, मेंघानीनगर, वस्त्रापुर, ओढ़व, मणिनगर बोटा, सुरेन्द्रनगर, लिमडी, सोनगढ़, भावनगर, गिरनार, राजकोट, जामनगर, मोरबी, बाकानेर आदि नगरों के साधार्मियों को आमंत्रित किया।

उक्त सभी स्थानों पर रथ का स्वागत किया गया एवं पूजन-प्रवचनादि कार्यक्रम पूर्वक रथ में शास्त्र विराजमान कर नगर में शोभायात्रा निकाली गयी।

महाविद्यालय की महत्त्वपूर्ण गतिविधियों के अन्तर्गत...

साप्ताहिक विचार गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की गतिविधियों के अन्तर्गत तात्त्विक विचार गोष्ठियों में 06 नवम्बर 2022 को **जैन इतिहास में आचार्य परम्परा** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित अनिलजी शास्त्री जयपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में उपाध्याय वर्ग से संभव जैन ललितपुर तथा शास्त्री वर्ग से सक्षम जैन ललितपुर व हर्षित जैन दमोह चुने गए। सत्र का संचालन अरविन्द जैन खड़ैरी तथा नमन जैन हटा एवं मंगलाचरण आकिंचन्य पुजारी खनियांधाना ने किया। अन्त में आभार-प्रदर्शन उपप्राचार्य पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

इसी शृंखला में दिनांक 13 नवम्बर 2022 को **जिन अध्यात्म का सार : छहढाला** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता श्रीमती कमलाजी भारिल्ल जयपुर ने की एवं निर्णायक के रूप में पण्डित गौरवजी शास्त्री उखलकर रहे।

श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में उपाध्याय कनिष्ठ से विशुद्धि जैन मुंबई एवं उपाध्याय वरिष्ठ से स्वयं जैन खनियांधाना चुने गए। सत्र का संचालन नमन जैन हटा तथा सुरेन्द्रदास चैन्नई एवं मंगलाचरण जीवगन जैन चेन्नई ने किया। आभार-प्रदर्शन पण्डित अमनजी शास्त्री लोनी ने किया।

इसी क्रम में दिनांक 20 नवम्बर 2022 को **जैन दर्शन में प्रमाण मीमांसा** विषय पर परीक्षामुख के आधार पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया ने की।

उपाध्याय वर्ग से श्रवण उपाध्ये शिरहटी एवं शास्त्री वर्ग से पुष्प जैन आगरा श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में चुने गए। सत्र का संचालन श्रीवर्द्धन पाटील कुम्भोज तथा विराग वेलोकर डासाला एवं मंगलाचरण अक्षत जैन खनियांधाना ने किया। आभार-प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

श्री टोडरमल महाविद्यालय का सुयश

1) जोधपुर : अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जोधपुर द्वारा डॉ. विकासजी शास्त्री बानपुर को **तत्त्वार्थ सूत्र के आलोक में युगीन समस्याओं के समाधान** विषय पर उत्कृष्ट शोधकार्य (Ph.D) करने के लिए 'डॉ. विमला भण्डारी जैनरत्न शोध सम्मान 2022' से सम्मानित किया गया। **ज्ञातव्य है कि** आप श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के 23वें बैच के स्नातक विद्वान हैं। आप गतवर्ष 2021 में अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचन्द भारिल्ल पुरस्कार भी प्राप्त कर चुके हैं।

2) श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक विद्वान पण्डित नयनजी शास्त्री ने NTA द्वारा आयोजित UGC-NET परीक्षा में दूसरी बार संस्कृत विषय में कोड-73 से प्रथम प्रयास में ही JRF प्राप्त की। ज्ञातव्य है कि पूर्व में भी आपने संस्कृत विषय से कोड-25 से प्रथम प्रयास में ही JRF प्राप्त की थी। आप वर्तमान में महाविद्यालय में संस्कृत अध्यापक के रूप में अपनी सेवायें दे रहे हैं। जैनपथ प्रदर्शक परिवार आपके उज्जवल भविष्य की भावना भाता है।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित...

जैन तिथिदर्पण - 2023

जैन तिथिदर्पण 2023 का प्रकाशन जैन पथप्रदर्शक के 2 नवम्बर वाले अकं किया जा चुका है। यह तिथिदर्पण अष्टमी व चतुर्दशी पर व्रत-उपवास तथा अनेक प्रकार के नियमों का पालन करने वाले साधर्मियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें : **अखिल शास्त्री - 7412078704**

निर्वाण महोत्सव पर विशेष शिविर सम्पन्न

तीर्थधाम मंगलायतन : यहाँ 23 से 27 अक्टूबर 2022 तक श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट अलीगढ़ एवं श्री कुंदकुंद प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के तत्त्वावधान में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित विमलदादा झांझरी, पण्डित जे. पी. दोशी, पण्डित प्रदीपजी झांझरी, पण्डित सचिनजी जैन, ब्र. कल्पनाबेन के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। प्रतिदिन विविध विधान पण्डित संजयजी शास्त्री के निर्देशन में हुए।

इस अवसर पर श्री नगेशजी जैन पिड़ावा, डॉ. योगेशचन्द्रजी अलीगंज, पण्डित ऋषभजी उस्मानपुर, पण्डित हितेशजी चौबटिया, ब्र. सुकुमाल झांझरी उज्जैन, अमितजी अरिहंत मडावरा, डॉ. बासन्तीबेन शाह मुंबई, ब्र. पुष्पलताजी जैन, ब्र. समताबेन, ब्र. ज्ञानधाराबेन, उज्जैन आदि का समागम रहा। शिविर का परिचय पण्डित अरहन्तप्रकाशजी झांझरी, मङ्गलायतन का परिचय पण्डित अशोकजी लुहाड़िया एवं आभार प्रदर्शन पण्डित सुधीरजी शास्त्री ने किया।

बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

सोनगढ़ (गुज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह के तत्त्वावधान में 10 से 13 नवम्बर 2022 तक बाल शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर लघु पंचपरमेष्ठी विधान, गुरुदेवश्री के पुरुषार्थसिद्धि उपाय पर सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त पण्डित पवित्रजी शास्त्री आगरा व पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री खनियांधाना की कक्षाओ का लाभ मिला। समस्त कार्यक्रम पण्डित सोनूजी शास्त्री (प्राचार्य) के निर्देशन में सम्पन्न हुए।

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन तथा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app आज ही Download करें या Visit करें – www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें – www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- FB-/vitragvani YT-c/ vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

शोक समाचार

1) घुवारा निवासी **श्री चन्द्रभानजी जैन (नन्नाजी)** का दिनांक 27 अक्टूबर 2022 को शान्त परिणामों से देहवियोग हो गया। आपका पूरा जीवन तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित था। सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि सिद्धायतन की संकल्पना, निर्माण एवं सफल संचालन आपके द्वारा ही किया गया। आपने अपना सम्पूर्ण जीवन एक सच्चे आत्मार्थी के तरह व्यतीत किया। आप जहाँ भी सेवारत रहे वहाँ तत्त्वप्रचार की गतिविधियों से सक्रियता से जुड़े रहे। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के साथ आपका गहरा आत्मीय सम्बन्ध था। अनेक नाजुक अवसरों पर ट्रस्ट के साथ मजबूत स्तम्भ के रूप में खड़े रहे। आपका निधन मुमुक्षु समाज के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

2) जैथल निवासी **पण्डित धर्मचन्दजी जैन सेठिया** का 27 अक्टूबर 2022 को स्वर्गवास हो गया। आप तत्त्वज्ञान की रूचि रखने वाले गुरूदेवश्री के अनन्य भक्त थे। आप प्रतिवर्ष दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रचार के लिए समाज में जाते थे।

3) खड़ैरी निवासी **श्रीमती मथुराबाई जैन** का पंच परमेष्ठी के स्मरण पूर्वक 31 अक्टूबर 2022 को देह परिवर्तन हो गया है। ज्ञातव्य है कि आप श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी की माताश्री थीं।

4) मौ (भिण्ड) निवासी **श्री महेन्द्रकुमारजी जैन सिंघई** का 15 नवम्बर 2022 को देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी साधर्मी वात्सल्य रखने वाले सच्चे आत्मार्थी थे। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी ग्वालियर के पिताश्री थे।

5) छिन्दवाड़ा निवासी बाल ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी धवल का दिनांक 20 नवम्बर 2022 को निधन हो गया। आप एक उच्च कोटि के विद्वान थे। गुरूदेवश्री से प्राप्त तत्त्वज्ञान को आपने आत्मसात करते हुए जन-जन तक पहुँचाया।

दिवंगत आत्माएँ शीघ्र-अति-शीघ्र अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

सदी के ऐतिहासिक पंचकल्याणक का ...

ढाईद्वीप रथ महाराष्ट्र व राजस्थान में आमंत्रण देते हुए

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2021-23*

आवश्यक सूचना

20 जनवरी से 26 जनवरी, 2023 तक

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न होने जा रहा है।

इस अवसर पर देश के अनेक साधर्मियों ने ढाईद्वीप जिनायतन में जिन-प्रतिमा विराजमान करने के भाव संजोये है। हम सभी से सम्पर्क करने का प्रयास कर रहे हैं; परन्तु कुछ लोगों का कोई सम्पर्क माध्यम हमारे पास न होने से सम्पर्क नहीं हो रहा है।

अतः आपसे अनुरोध है कि यदि आपने ढाईद्वीप में जिन-प्रतिमा विराजमान करने हेतु वचन दिया है और अभी तक आपसे कोई सम्पर्क नहीं हो पाया है तो कृपया अतिशीघ्र नीचे दिए हुए नम्बर पर सम्पर्क कर अपना रिकॉर्ड अपडेट करा लेवें।

– डॉ. विवेक शास्त्री इंदौर
09893300691

श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

IFSC Code	:	UBIN 0544809
A/C No.	:	448001010120070
Pan No.	:	AAHTS9425Q

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 21 नवम्बर 2022

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**